रेखा कोकचा की कहानियों में यथार्थ
;खाली हाथ के विशेष संदर्भ मेंद्ध

डॉ. किरण शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, यमुनानगर

मनु के अनुसार 'यत्रा नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्रा देवता' अर्थात् जहाँ नारी का आदर किया जाता है, वहाँ देवताओं का वास होता है ।[प] मुंशी प्रेमचन्द के शब्दों में फ्संसार में जो सत्य है, सुन्दर है, मैं उसे स्त्राी का प्रतीक मानता हूँ ।[पप] जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' में :–

फ्नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्व रजत नभ–पग–तल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में ।[पपप]

साहित्य संसार में आधुनिक नारी दशा को व्यक्त करने वाला महिला लेखन समकालीन जीवन की परिस्थितियों की जटिल प्रक्रियाओं और साहस से युक्त कार्यों का आईना है । इस लेखन का संबंध जहाँ साहित्य की बदलती प्रवृत्तियों से जुड़ा रहा है, वहीं नारी जीवन के भोगे हुए अनुभवों का परिचायक भी रहा है । इस रूप में साहित्य नारी समाज की चेतनशीलता और उसके विकासक्रम का सजीव चित्रा हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है ।

जहाँ तक **रेखा कोकचा** की पुस्तक 'नारी नाम संघर्ष का' में चित्रिात कहानियों का प्रश्न है तो लेखिका ने इस बात को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है कि केवल पुरुष ही स्त्राी पर अत्याचार नहीं करता, बल्कि स्वयं औरत भी औरत पर अत्याचार के लिए कम जिम्मेदार नहीं है । 'नारी की मारी बेचारी नारी' उक्ति महिलाओं के द्वारा महिलाओं के शोषण की गाथा प्रस्तुत करती है। चाहे दहेज के लिए बहू को जलाने वाली सास हो, चाहे भाभी को ताने मारने वाली ननद हो, चाहे विवाहित पुरुष के साथ आने वाली दूसरी स्त्राी यानि सौत हो, चाहे कोठे पर वैश्यावृत्ति का ध्ंध चलाने वाली मौसी हो, चाहे पैसों की खातिर देह व्यापार करने वाली तथा पुरुषों का पथ प्रदर्शन करने वाली हो – सबकी सब औरत के रूप में होकर भी औरत का ही शोषण कर रही है ।

लेखिका ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी की विवशता, संघर्षशीलता और अत्याचारों से जूझते हुए आगे बढ़ने का वर्णन किया है ।

हिन्दी कथा के क्षेत्रा में लेखिका रेखा कोकचा की ख्याति व प्रसिद्धि का कारण इनकी कहानियों में यथार्थ का सन्तुलित समावेश है, कहानी में कल्पना और यथार्थ के मिले–जुले रूपों को पाठकों को समक्ष प्रस्तुत करना कोई सरल कार्य नहीं है । एक कुशल लेखक या लेखिका ही इसमें महारथ हासिल कर पाते हैं । कल्पना की उड़ान को वास्तविकता के साथ सन्तुलित रूप से प्रस्तुत करने की योग्यता में लेखिका को महत्त्वपूर्ण सफलता मिली है । यहाँ हम उनकी पुस्तक 'नारी नाम संघर्ष' में संकलित कहानी 'खाली हाथ' पर विचार करेंगें ।

प्रस्तुत कहानी 'खाली हाथ' में हमारे समक्ष आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की सच्ची तस्वीर खींची गई है । कहानी मुख्य रूप से समय के बदलते दृश्य को हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है ।

सरोजा देवी और हजारी प्रसाद जो आदर्श की मूर्ति है, उनके घर कहानी की नायिका शांति काम करती है । सरोजा देवी और हजारी प्रसाद द्वारा शांति को अपनी पुत्रावधू के रूप में स्वीकारना उनके स्वस्थ एवम् आदर्श दृष्टिकोण का परिचायक है । शांति जब इस बात को मानने को तैयार नहीं होती और कहती है –

फ्मालकिन, कृप्या, मखमल में टाट का पैबंद न लगाएँ । कहाँ आप इतने बड़े लोग कहाँ मैं अपनी पूरी हस्ती भी बेच दूं तो इतने पैसे न होंगे जिससे प्रतीक बाबू का एक सूट बन सके ।[पअ]

सरोजा देवी शांति के सामने स्वीकार करते हुए कहती है कि मेरा पुत्रा प्रतीक बिगड़ा हुआ, भटका हुआ युवा है, उसे सुधरने के लिए कोई दृढ संकल्प वाली लड़की ही चाहिए और वह गुण तुममें है । लेकिन शांति पुनः अपनी मालकिन से प्रार्थना करते हुए कहती है –

फ्मालकिन, ऐसा अनर्थ न कीजिए, प्रतीक बाबू पढ़े–लिखे सुंदर पुरुष हैं । उनके लिए एक से बढ़कर एक घराने की लड़की मिल जाएगी । मैं अनपढ़ गरीब भला किस काबिल हूँ और रही उनकी आदतें, सो जवानी है, सभी में होती है । शादी के बाद सब ठीक हो जाएगा ।[अ]

परन्तु सरोजा देवी ने एक न सुनी और कहा – फ्लड़कियां बहुत आएंगी, घराने भी बहुत आएंगे, पर तुम जैसी सुशील, मेहनती और दृढ़ निश्चयी कोई न होगी । अब अपने आँसू पोंछो और ड्राइंग–रूम में चलो, सब लोग इंतजार कर रहे हैं ।[अप]

सरोजा देवी ने शांति को समझाया ।

प्रतीक ने शांति को हीरे की अंगूठी पहनाई । हाल एक बार फिर तालियों से गूँज गया । प्रतीक भी खुश था कि इतनी सुंदर लड़की से उसकी शादी हो रही थी ।

प्रतीक के पिता शांति के पिता को भी पूरा आत्म–सम्मान देकर इस रिश्ते को स्वीकार करने की प्रार्थना करते हैं । निश्चित मुर्हूत्त में प्रतीक और शान्ति प्रणय–सूत्रा में बंध गए । यह कहानी का आदर्श पक्ष है ।

शांति के साथ होने के बाद भी प्रतीक बुरे लोगों से संगति नहीं छोड़ता । हजारी प्रसाद और सरोजा देवी से शांति की वेदना छिपी न रह सकी । फिर हजारी प्रसाद ने दोस्तों से दूर इन दोनों को कैरेबियन ट्रिप पर भेज दिया । जब यार दोस्त ही न रहेंगे तो कुछ तो ध्यान देगा प्रतीक । ऐसा ही हुआ पोर्ट ऑफ स्पेन पहुंचकर प्रतीक ने पहली बाद होटल में शांति को पत्नी होने का दर्जा दिया । वापिस लौटने पर माता–पिता अपने बेटे के स्वभाव में होते परिवर्तन से प्रसन्न थे ।

प्रतीक शांति की बात मानकर पिता के साथ दफ्रतर भी जाने लगता है । कुछ ही दिनों में प्रतीक सारा काम देखने लगा । वह बहुत जल्दी हर काम में कुशल हो गया था । पूरे स्टाफ से प्रेम से काम लेता, उनके सुख–दुख, खुशी में शरीक होता । सरोजा देवी ने पुत्रा के बदले स्वभाव को देखकर नजर का काला टीका लगाया । हजारी प्रसाद प्रसन्न होकर शांति को कहते हैं :–

फ्शांति मैं जो सोचकर तुम्हें इस घर में बहू बनाकर लाया था, तुमने वह कर दिखाया । आज प्रतीक में जो बदलाव आया है, वह तुम्हारे कारण ही संभव हो पाया है । मैं तुम्हारा अहसानमंद हूँ .....[अपप]

फ्ये आप क्या कर रहे हैं बाबूजी । इस दो पैसे की नौकरानी को बहू का दर्जा देकर आपने जो महानता दिखाई है, वह भला मैं क्योंकर भुला सकूंगी । मैंने वही किया जो स्त्राी धर्म है ।[अपपप]

शांति ने नजरें झुकाकर अदब से कहा ।

हजारीप्रसादः फ्बेटी मैं सोचता हूँ अब दफ्रतर से रिटायर हो जाऊँ और सारा काम प्रतीक को सौंप दूँ ।[य]

शांति : जी नहीं बाबूजी अभी उसका समय नहीं आया है । वे अभी–अभी संभले हैं, अतः दोबारा बहकने में समय न लगेगा । अभी आप कुछ और समय उनके साथ आएँ–जाएँ ।[य]

फ्तुम शायद ठीक कहती होय् गहरी श्वास लेते हुए हजारी प्रसाद बोले ।[पग]

सरोजा देवी से दादा बनने की खबर सुनकर हजारी प्रसाद की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। पिता बनने की खबर सुनकर प्रतीक भी खुशी से झूम उठता है । परिवार में सभी खुश थे । शांति ने एक लड़के और लड़की को जन्म दिया । प्रतीक के स्वभाव में आए परिवर्तन ने हजारी प्रसाद को पुत्रा के प्रति बेफिक्री का आभास कराया और फिर दो फूल खिल जाने से तो मानों उनमें नई आशा का संचार हुआ । धीरे–धीरे उन्होंने दफ्रतर जाना बंद कर दिया । कभी–कभी जाते तो तुरंत लौट आते । प्रतीक पर अब उनका विश्वास जमने लगा था ।

परन्तु जिस व्यक्ति को एक बार बुरी लत लग जाए फिर मुश्किल से छूटती है । ऐसा ही प्रतीक के साथ हुआ । कुछ दिन तक तो सब ठीक–ठाक चलता रहा फिर जैसे–जैसे मित्रा–मंडली को पता लगने लगा कि अब प्रतीक अकेला दफ्रतर जाता है, एक–एक कर जुटने लगे । पुराने मित्रा फिर से मिल बैठने

लगे । हाँ, इतना अवश्य था कि अपने कारोबार के प्रति सजग प्रतीक ने ऑफिस टाईम खराब नहीं किया । पर छः बजते ही पहुँच जाता अपनी मंडली में और फिर देर रात तक शराब–शबाब का दौर चलता रहा । पुत्रा की उदण्ड प्रवृत्ति को देखकर हजारी प्रसाद भी बीमार रहने लगे थे, फिर एक दिन हृदयगति रुक जाने से उनका देहान्त हो गया । पति के पीछे–पीछे सरोजा देवी भी कुछ ही दिनों में परलोक सिधर गई ।

प्रतीक के माध्यम से लेखिका ने बताया कि समय बीतने के साथ–साथ अपने भी हमसे दूर हो जाते हैं । कभी–कभी मनुष्य में एक प्रवृत्ति के प्रति प्रेम इतना बढ़ जाता है कि वह अन्यों के प्रति स्वार्थी हो जाता है वह उनके उपकारों को भूल बैठता है । वह अपने स्वार्थ की सि(हेतु प्रायः दूसरों को भी दुःख पहुँचाता है । हमारे समाज में एक स्त्राी को ही सदैव बलिदान देना पड़ता है, उसे ही सदैव झुकना पड़ता है । कभी डर तो कभी दूसरों के सुख के लिए । एक पुत्राी के रूप में माता–पिता के सपनों को साकार करने हेतु बलिदान, एक पत्नी के रूप में पति के आदेशों का पालन करने हेतु बलिदान व माँ के रूप में अपने बच्चों के सुख हेतु अपनी सुख–सुविधओं का बलिदान ।

अब शांति का कोई सहारा न रह गया था । निरकुंश प्रतीक ने सभी सीमाओं को उल्लंघन कर दिया । वह घर में ही आवारा लड़कियां लाने लगा था । घर का माहौल देखते हुए शांति ने मकान के पिछवाड़े बच्चों के साथ स्वयं को स्थानान्तरित कर लिया और अगले भाग की ओर खुलने वाले दरवाजे को सदा के लिए बंद कर दिया । वह दिन–रात मोम की तरह घुलने लगी और स्वयं को असाध्य रोग लगा बैठी । डॉक्टर ने आकर चैक किया और हृदय रोग विशेषज्ञ को दिखाने का परामर्श दिया ।

यह एक कटु सत्य है कि कभी–कभी हम जीवन के ऐसे मोड़ पर आ खड़े होते हैं, जहाँ सही व गल्त के बीच अंतर कर पाना कठिन होता है । यह क्षण एक बुरे स्वपन की तरह आकर चला जाता है, पर इसकी टीस जीवन पर्यन्त हमारे मन में एक बोझ बनकर रहती है । यह कहानी ऐसे युवक की है जो अपनी जवानी में डगमगाते हुए जीवन के माया–मोह में इतना विलीन हो जाता है कि वह यह भी भूल जाता है कि उसके विलासित पूर्ण जीवन के पीछे उसके माँ–बाप का कितना बड़ा बलिदान है, व उसकी पत्नी का कितना असीम प्रेम है ।

एक दिन शांति की तबीयत ज्यादा खराब होने पर बच्चे प्रतीक को बुलाने गए तो उसने कहा–

फअरे तो डॉक्टर को बुलाओ, मैं क्या करूँगा ।[?''] प्रतीक ने लापरवाही से जूते उतारते हुए कहा ।

फनहीं पापा, आप जल्दी मम्मी को हॉस्पिटल लेकर चलिए वो दर्द से छटपटा रही है । आयुष ने व्यग्रता से कहा ।

चलो, मैं आता हूं । प्रतीक ने कहते हुए फिर से जूते पहने ।[गप] डॉक्टर ने पूर्ण जाँच के बाद शांति को ब्रेन ट्यूमर बताया । सुनकर प्रतीक को ठेस लगी । ऐसा नहीं था कि वो अपनी पत्नी को प्रेम नहीं

करता था वो तो सिर्फ आवारा तबीयत का मालिक था पर शांति के लिए उसके ह्रदय में आज भी वही प्रेम था जो शादी से पहले था ।

प्रतीक पश्चाताप की अग्नि में जल रहा था और वह स्वयं अपनी पत्नी व बच्चों के सामने यह स्वीकार करता है कि मेरी आँखों पर तो ऐसी पट्टी बंधी थी कि मैं सब कुछ भूल गया, पर शांति क्या तुम अपने प्रेम के अध्किार से मुझे रोक नहीं सकती थी । फ्तुमने एक बार भी नहीं बताया कि तुम इतनी कष्टप्रद स्थिति से गुजर रही हो ।”[गपप] शांति का हाथ अपने हाथ में लेकर प्रतीक ने कहा ।

फ्क्या फायदा होता आप तो अपनी दुनिया में मस्त थे ।”[गपपप] कहते हुए शांति के नेत्रा सजल हो गए ।

फ्अरे, मैं अगर पथभ्रष्ट था तो क्या मेरी पत्नी होने के नाते तुम्हारा दायित्व नहीं था कि मुझे सही राह दिखाती ।”[गपअ]

फ्मैंने तो कई बार आपसे भी कहा पर मेरी छोड़िए, आप तो बाबू जी और माँजी को भी आँख दिखा गए । खैर छोड़िए, अब इन सब शिकवे–शिकायतों से क्या लाभ । मेरे लिए इतना ही बहुत है कि आप कम से कम इस समय में मेरी आँखों के सामने हैं ।”[गअ]

शांति का प्रस्तुत कथन भारतीय आदर्शवादी महिला के चरित्रा को हमारे समक्ष उतारता है कि पति चाहे कैसा भी हो, भारतीय स्त्राी उसे परमेश्वर या भगवान के रूप में पूजती है । शांति को इस दशा में देखकर प्रतीक फफक–फफक कर रो उठता है और कहता है कि –

फ्शांति तुम्हें कुछ नहीं होगा । मैं आज तुमसे वादा करता हूँ कि अबसे मैं अपनी पुरानी आदतों को छोड़ दूँगा ।[गअप] भारी स्वर में प्रतीक बोला ।

पूरे सप्ताह भर प्रतीक शांति के पास रहा । एक सप्ताह तक शांति को उपचार से कोई लाभ नहीं हुआ तो डॉक्टरों ने तुरंत आप्रेशन के लिए कहा क्योंकि अब बहुत विलम्ब हो चुका था ।

आप्रेशन थियेटर से डॉक्टर सिर नीचे किए आया । फ्आई एम सॉरी मिस्टर प्रतीक, आलरेडी इट्स गॉट टू लेट”[गअपप] डॉक्टर ने कहा ।

अलका और आयुष बिलख कर रो पड़े । बच्चे अपने पिता को अपनी माँ की हालत का दोषी मानते हैं । प्रतीक पश्चाताप की आग में जलते हुए बच्चों के सामने अपने अपराध् को स्वीकार करते हुए कहता है :–

फ्हाँ बेटे, तुम ठीक कहते हो, मैं तुम्हारा, तुम्हारी मम्मी का और तुम्हारे दादा–दादी सबका मुजरिम हूँ ।”[गअपपप] कहकर प्रतीक फफक पड़ा । उसके हाथ खाली थे । रेत तो मुट्ठी से कबकी सरक गई थी ।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि जीवन के यथार्थ की छोटी सी झलक देती यह कहानी पाठक को गंभीरता से सोचने पर विवश करती है । इस कहानी को पढ़कर ऐसा नहीं लगता कि यह लेखिका की

कल्पना है जो शब्दों में बाँध दी गई है बल्कि ऐसा लगता है कि प्रत्येक पात्रा जीवन्त है, जो अपनी आप बीती को महसूस कर रहा हो । इसमें मानवीय रागात्मकता तथा संबंधें के बिखराव से उत्पन्न सूनेपन का चित्राण, आए दिन बुजुर्गों की होती अवहेलना, नशे में ध्ुत तथा उससे उत्पन्न गल्त रास्तों की ओर अग्रसर होना, नशे व दोस्तों की दुनिया में लीन होकर भूल जाना तथा उससे उत्पन्न स्त्राी की पीड़ा आदि का चित्राण लेखिका ने बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है ।

कहानी मुख्य रूप से समय के बदलते हुए रूपों को दर्शाती है । समय जो कभी निश्चित नहीं होता । एक ओर समय सुख और प्रेम से हमें अवगत कराता है तो दूसरी ओर यही समय पीड़ा, व्यथा और दुख से भी सामना कराता है ।

समय के इस उतार–चढ़ाव के साथ व्यक्ति किस प्रकार स्वयं को ढाल लेता है, किस प्रकार समय बुरा होने पर अच्छे–से–अच्छे व्यक्ति तेवर बदल लेते हैं । किस प्रकार बुरे समय में व्यक्ति कुछ बीते सुखदाई पलों का स्मरण कर क्षण भर को खुश हो लेता है । इस कहानी में लेखिका ने गागर में सागर भर दिया है । समय के बदलते रंगों को पूरी यथार्थता के साथ, प्रत्येक घटनाक्रम को इस तरह प्रस्तुत किया गया है कि ऐसा लगता है मानो हमारे समक्ष ही यह सम्पूर्ण घटना घटित हो रही है । यह तो लेखिका रेखा कोकचा की क्षमता, कुशलता व योग्यता का परिणाम है कि जो इस निपुणता के साथ यथार्थ की सच्ची तस्वीर खींच पाई ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[i] js[kk dksdpk & ukjh uke la?k"kZ dk] izFke laLdj.k] i`- 5
[ii] ogh
[iii] ogh
[iv] js[kk dksdpk] ukjh uke la?k"kZ dk esa ladfyr dgkuh] [kkyh gkFk] izFke laLdj.k] i`- 4
[v] ogh] i`- 5
[vi] ogh] i`- 6
[vii] ogh] i`- 9
[viii] ogh] i`- 9
[ix] ogh] i`- 10
[x] ogh] i`- 12
[xi] ogh] i`- 12
[xii] ogh] i`- 13

[xiii] ogh] i`- 13
[xiv] ogh] i`- 13
[xv] ogh] i`- 13
[xvi] ogh] i`- 13
[xvii] ogh] i`- 13
[xviii] ogh] i`- 13